प्राचीन भारतीय दर्शन

वैदिक एवं औपनिषद् विश्व-दृष्टि

→ दर्शन शब्द संस्कृत के दृश् धातु से बना है जिसका अर्थ होता है - "जिसके द्वारा देखा जाये" अर्थात् 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' या जिसके द्वारा देखा जाय वह दर्शन है। यह दर्शन वह अन्तर्चक्षु है जिसके माध्यम से तत्व के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है।

→ 'दृश्यते इति दर्शनम्' अर्थात् जिसे देखते हैं वह दर्शन है, से तात्पर्य तत्वदर्शन से है। तत्व ब्रह्म है अतः दर्शन का लक्ष्य ब्रह्मज्ञान या मोक्ष है।

→ राधाकृष्णन् के शब्दों में 'परमसत्ता' के साथ साक्षात्कार करने का ही दूसरा नाम दर्शन है।

ईशावास्योपनिषद् में दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा गया है! —

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्वं पूषन्नपावृणु सत्य धर्माय दृष्टये॥ (मंत्र-15)

अर्थात -

सत्य का मुख स्वर्णमय पात्र से ढका हुआ है। अतः हे पूषण! देवता इसे अनावृत कर सत्य को प्रकाशित करें। अतः दर्शन सत्य को प्रकाशित करने का माध्यम है।

→ महर्षि गौतम के अनुसार - युक्तिपूर्वक तत्वज्ञान प्राप्त करने का माध्यम दर्शन है।

→ भारतीय मत में कहा जा सकता है - "हमारी सभी प्रकार की अनुभूतियों की युक्तिसंगत व्याख्या कर वास्तविकता का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना दार्शनिक चिन्तन का उद्देश्य है।"

अनुभूतियाँ दो प्रकार की होती हैं! —

(i) ऐन्द्रिय (Sensous) — 5 ज्ञानेन्द्रिय

(ii) अतीन्द्रिय (Non Sensuous) मन

→ 'सत्य' या वास्तविकता का ज्ञान अतीन्द्रिय अनुभूति से प्राप्त होता है।

अतीन्द्रिय/ आध्यात्मिक अनुभूति

→ भारतीय मत में 'दर्शन' शब्द का अर्थ ही है साक्षात् देखना अर्थात् परम तत्व का साक्षात्कार या अपरोक्षानुभव।

→ भारतीय दर्शन के दो साधन हैं – श्रुति और तर्क।

"आत्मा को जानो" (आत्मानं विद्धि) यह भारतीय दर्शन का उद्घोष है।

→ त्रिविध दुःख (आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक) की निवृत्ति तथा शाश्वत आनन्द की प्राप्ति भारतीय दर्शन का लक्ष्य है।

→ श्रवण, मनन, तथा निदिध्यासन इस लक्ष्य प्राप्ति के त्रिविध साधन हैं।

* अंग्रेजी में दर्शन शब्द के लिए 'फिलॉसोफी' (PHILOSOPHY) शब्द का प्रयोग किया जाता है।

→ फिलॉसोफी : दो ग्रीक शब्द से बना है —

फिलॉस (Philos) — प्रेम (love)

सोफिया (Sophia) — ज्ञान (wisdom)

→ ज्ञान के प्रतिप्रेम (Love for wisdom) फिलॉसोफी कहते हैं।

or

विद्या प्रेम / सरस्वती / विद्या देवी / ज्ञान के प्रति अनुराग

→ पाश्चात्य मत में: दर्शन मनुष्य का एक निष्पक्ष बौद्धिक प्रयत्न है जिसके द्वारा वह विश्व को उसकी सम्पूर्णता में समझने की चेष्टा करता है। दर्शन की इस परिभाषा से इसके तीन प्रमुख विशेषता सामने आता है:

1. निष्पक्षता
2. बौद्धिकता और
3. सम्पूर्णता

→ कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों ने दर्शन को अपने शब्दों में व्यक्त किया है: —

→ सुकरात – दर्शन आत्मज्ञान/अपने आपको जानने का माध्यम है। (Know the self)

→ प्लेटो – दर्शन से तत्व के मूल स्वरूप का अन्वेषण होता है।

→ अरस्तू – दर्शन से परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की खोज होती है।

→ हीगेल – दर्शन वास्तविकता का तत्वज्ञान है।

→ हर्बर्ट स्पेन्सर - दर्शन का सम्बन्ध प्रत्येक वस्तु से है।

→ बर्ट्रेण्ड रसेल - दर्शन विज्ञानों के आधारों का तार्किक अध्ययन है।

→ कान्ट - दर्शन आलोचनात्मक परीक्षण है।

* पाश्चात्य दृष्टि में दर्शन बौद्धिक ज्ञान है जबकि भारतीय दर्शन में दर्शन ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान है।

→ सुकरात - ज्ञान ही सद्गुण है।

→ बेन्थम - अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख अपेक्षित है।

→ मिल - सन्तुष्ट सूअर की अपेक्षा असन्तुष्ट सुकरात अच्छा है।

→ हीगेल - कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है।

→ ब्रेडले - अपना स्थान और उसका कर्तव्य

→ कान्ट - सदिच्छा ही शुभ है।

→ कान्ट - कर्तव्य के लिए कर्तव्य आवश्यक है।

* दर्शन के विभाग

दर्शन के मुख्य तीन विभाग है:—

1. तत्वमीमांसा (Metaphysics)
2. ज्ञानमीमांसा (Epistemology)
3. नीतिमीमांसा (Ethics)

तत्वमीमांसा, दर्शन की वह शाखा जिसके अन्तर्गत मूल तत्व क्या है? उसकी संख्या क्या है, एवं उसका स्वरूप क्या है आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है वह तत्वमीमांसा कहलाती है। इस सन्दर्भ में चार प्रश्न माने जाते है:

1. मूल तत्व भौतिक है (Material)
2. मूल तत्व आध्यात्मिक है या चेतन है (Spiritual)
3. मूल तत्व भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों है
4. मूल तत्व न भौतिक है न आध्यात्मिक है, बल्कि दोनों से विलक्षण है।

इन चारों मत को क्रमशः —
भौतिकवाद, (Materialism)
प्रत्ययवाद (Idealism)
द्वैतवाद (Dualism)
अनुभयवाद (Neutralism)

→ मूल तत्व की संख्या को लेकर तीन मत है —

1. मूल तत्व एक है (एकवाद - Monism)
2. मूल तत्व दो है (द्वैतवाद Dualism)
3. मूल तत्व अनेक है (अनेकवाद Pluralism)

→ इस मत को मानने वालों में क्रमशः — स्पिनोजा, डेकार्ट एवं लाइबनित्ज का नाम आता है।

→ भारतीय दर्शन में क्रमशः शंकराचार्य, अद्वैतवेदान्त, सांख्य एवं जैन, विशिष्टाद्वैत तथा मीमांसा दर्शन का नाम आता है।

भौतिकवाद (Materialism) एक दार्शनिक सिद्धान्त है, जिसके अनुसार विश्व का मूल आधार जड़ (Matter) या जड़ तत्व है। यही भौतिक जड़ ही विश्व के नाना पदार्थों की उत्पत्ति होती है।

भौतिकवाद के कुछ सामान्य गुण या विशेषता है —

- → निराशापूर्ण
- → देशकाल में फैलना
- → अचेतन
- → अनीश्वरवादी
- → वस्तुवादी
- → यंत्रवादी

→ भौतिकवाद को मानने वालों में प्रमुख रूप से — थेलिज (जल) एनैक्सिमेण्डर (असीमित / अपरिमेय), एनैक्सिमेनीज (वायु) हेराक्लाइटस (अग्नि) एम्पेडोक्लीज (चार परमाणु – पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि) ल्यूकिप्पस (परमाणु) प्रमुख रूप से आते हैं। भारतीय दर्शन में एक मात्र चार्वाक भौतिकवादी है।

→ Metaphysics शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम एन्ड्रोनिकस (Andronicus) ने किया।

→ Ontology शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सी. वुल्फ (C. Wolff) ने किया।

→ Metaphysics and ontology दोनों शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में होता है।